अनन्तर्वार्थामितविक्रमस्त्वं सर्वे समाप्तोषि ततोऽसि सर्वः ॥४०॥

XI. 40.

सर्व O All ते to thee पुरस्तात before आय and पृष्ठतः behind नमः salutation ते to thee सर्वत एन on every side नमः salutation अस्तु be अनन्तर्वीर्थः infinite in power अभितिविक्रमः infinite in prowess त्वम् thou सर्वन् all समामोजि pervadest ततः wherefore सर्वः all असि thou art.

Salutation to Thee before and to Thee behind, salutation to Thee on every side, O All! Thou, infinite in power and infinite in prowess, pervadest all; wherefore Thou art All.

[(In every side: As thou art present every-where.

Pervadest: by Thy One Self.]

सखेति मत्वा प्रसमं यदुकां

हे कृष्ण हे यादव हे सखेति॥ अजानता महिमानं तवेदं

मया प्रमादात्प्रण्येन वापि ॥४१॥ यंबावहासार्थमसत्कृतोऽसि

विहारराय्यासनभोजनेषु॥ पकोऽयवाष्यच्यृत तत्समत्तं

तत्त्वामये त्वामहमप्रमेयम् ॥४२॥

XI. 41, 42.

तव Thy महिमानम् greatness इदम् this च and सजानता unconscious मया by me प्रमादात् from carelessness प्राथम due to love वा or याप merely